माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का बहु- कौशल अनुप्रयोग तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध

विनिता कुमारी*, डॉ.सपना सुमन**

* पीएच.डी.शोधार्थी, संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन (स्वायत्त), पटना
** असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन (स्वायत्त), पटना

सारांश

कौशल का शाब्दिक अर्थ है कला | बहु-कौशल अनुप्रयोग से अभिप्राय विविध कला जैसे सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल तथा नेतृत्व कौशल का प्रतिदिन के गतिविधियों में प्रयोग में लाने से है | वर्तमान अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का बहु- कौशल अनुप्रयोग तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध से संबंधित है | शोध गतिविधि को पूर्ण करने के लिए पटना जिला के 501 नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों का सरल यादृच्छिक विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया है | शोध का उद्देश्य सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल तथा नेतृत्व कौशल का शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध ज्ञात करना है | शोध परिणाम से ज्ञात होता है कि सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल तथा नेतृत्व कौशल का शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध है | सामाजिक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य उच्च सकारात्मक सहसंबंध पाया गया है |

***मुख्य बिंदु**: बहु- कौशल अनुप्रयोग, सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल, नेतृत्व कौशल, शैक्षणिक उपलब्धि, सहसम्बन्ध |*

परिचय

'शिक्षा' शब्द संस्कृत के 'शिक्ष' धातु से बना है जिसका अर्थ है सीखना या सिखाना | शिक्षा व्यक्ति के अंदर छिपी हुई जन्मजात शक्तियों को विकसित करने में सहायता प्रदान करती है | शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति को औपचारिक विधि के विविध चरण से होकर गुजरना पड़ता है | इस क्रम में व्यक्ति अपने जीवन के प्रारंभिक अवस्था में विद्यालय शिक्षा से भी गुजरता है जिसमें नर्सरी से लेकर 12 वीं कक्षा तक की शिक्षा शामिल है | जब एक बालक विद्यालय में नामांकन लेता है तो उसे प्रत्येक वर्ष उसकी मानसिक योग्यता तथा सामाजिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है | यह क्रम निरंतर बढ़ती चली जाती है तथा इस प्रक्रिया में उसमें विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास होता है जो उसके कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं। इन कौशलों को बालक किस प्रकार सीखता एवं उपयोग करता है उसे बहु-कौशल अनुप्रयोग कहते हैं।

बहु-कौशल अनुप्रयोग

बहु-कौशल अनुप्रयोग से तात्पर्य बालक के अपने जीवन में विभिन्न कौशलों के अधिगम एवं प्रयोग से है | बालक जब विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता है तो उसे शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियों का भी शिक्षण दिया जाता है जिससे बालको में ज्ञान के साथ-साथ विविध कला का विकास किया जा सके | विविध कला के रूप में बालको में सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल, नेतृत्व कौशल आदि कौशलों का विकास किया जाता है जिसके माध्यम से बालक अपने ज्ञान का प्रयोग करते हुए कुछ नवीन कार्य करने का प्रयास करता है | सृजन का अभिप्राय कुछ नया बनाने से है | विल्सन,गिलफर्ड एवं क्रिस्तेंसेन के अनुसार "सृजनात्मक-प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई नवीन उत्पत्ति हो | यह नवीन उत्पत्ति किसी समस्या के समाधान में उपयोगी होनी चाहिए |" (दत्त,1974, P.208) बालक औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा से प्राप्त शिक्षा के माध्यम से इतना ज्ञान प्राप्त कर लेता है कि माध्यमिक विद्यालय तक आते-आते उसमें सृजनात्मक कौशल का विकास हो जाता है और वह अपनी रुचि तथा शैक्षणिक योग्यता के आधार पर अपना भविष्य निर्धारित कर उसी दिशा में अग्रसर हो जाता है | जिसका परिणाम हमारे समाज के विविध क्षेत्र के व्यवसाय हैं | जिस बालक की अभिक्षता जिस व्यवसाय में अधिक होगी वह वालक उसी व्यवसाय में जाना पसंद करता है | अर्थात् एक बालक में यदि साहित्यिक अभिक्षमता अधिक है तो वह काव्य लेखन की तरफ अग्रसर होगा, वही जिस बालक की अभिक्षमता वाणिज्य में अधिक होगी वह वाणिज्य क्षेत्र में अपनी कौशल का प्रदर्शन करता है |

सृजनात्मक कौशल व्यक्ति के जीवन तथा व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक अंतर्क्रिया से भी सम्बंधित है जिसे सामाजिक कौशल के नाम से भी जाना जाता है | सामाजिक कौशल से अभिप्राय व्यक्ति के समाज के अन्य व्यक्तियों के आपस में संपर्क से संबंधित हैं | अर्थात् सामाजिक कौशल के विकास में शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | जिस व्यक्ति का सामाजिक कौशल अच्छा होता है उसमें साहस, आत्मविश्वास,धैर्य आदि गुणों की अधिकता पाई जाती है और यही गुण व्यक्ति के नेतृत्व कौशल विकसित करने में सहायक होते हैं | नेतृत्व कौशल से अभिप्राय समूह को मार्गदर्शन करने तथा संचालित करने से है | जिस प्रकार एक राजनीतिक सत्तारूढ़ दल का नेता देश को संचालित करता है उसी प्रकार समाज के विभिन्न क्षेत्र में एक नेता या

प्रतिनिधि की आवश्यकता होती है, जो उस क्षेत्र से संबंधित सभी व्यक्ति का मार्गदर्शन करते हुए सही दिशा में अपने समूह को अग्रसर कर सके | नेतृत्व कौशल विकसित करने में भी शिक्षा की भूमिका होती है | शिक्षा प्राप्त करना तथा विभिन्न कौशलों का विकास होना लगभग समान रूप से साथ-साथ चलती है | जिस बालक की शैक्षणिक गतिविधियों में रूचि अधिक पाई जाती है वे लगभग अपनी शैक्षणिक गितिविधियों के साथ-साथ विविध कलाओं को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं |

शैक्षणिक उपलब्धि

शैक्षणिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों के विद्यालय शिक्षा में प्राप्त विविध विषय की निष्पत्ति से है | बालक जब औपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है तो वह अपने शैक्षणिक निष्पत्ति के आधार पर ही अगले कक्षा में प्रवेश करता है | शैक्षणिक उपलब्धि या अकादमिक प्रदर्शन वह सीमा है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को अपनी शैक्षणिक योग्यता का प्रदर्शन करते हुए पार करना होता है | शैक्षणिक उपलब्धि के माध्यम से बालक के विषय गत ज्ञान का आंकलन किया जाता है | जो मुख्य रूप से लिखित मौखिक तथा साक्षात्कार के माध्यम से लिया जाता है | इस आंकलन के माध्यम से विद्यार्थियों की उपलब्धि को जानने की कोशिश की जाती है, जिसे बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि के नाम से भी जाना जाता है |

सम्बंधित साहित्य समीक्षा

चौहान और शर्मा (2017), ने लिंग के आधार पर सार्वजनिक और निजी स्कूल के छात्रों के बीच रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों पर अध्ययन किया। वर्तमान अध्ययन के परिणाम से संकेत मिलता है कि रचनात्मकता उन कारकों में से एक है जो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

श्रीनिवासनी (2014) ने आउट सोर्स वातावरण पर बहु-कौशल के प्रभाव का अध्ययन किया। इस शोध के उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना था: पहला अकाउंट सोर्स कंपनियां किस हद तक बहु-कौशल रणनीति का उपयोग कर रहे हैं तथा दूसरा कार्यकर्ता के साथ-साथ प्रबंधन और बहु-कौशल का उपयोग करने के क्या फायदे और नुकसान है। निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ कि श्रमिकों के प्रतिरोध के कारण इस रणनीति को लागू करना कठिन चुनौती थी | बहु-कौशल रणनीति के लाभ कर्मचारियों के बीच सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना तथा कर्मचारियों के ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ कौशल वृद्धि करना था |

सुरपुरमम (2014), ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों पर अध्ययन किया । यह शोध रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध के लिए अनुभवजन्य समर्थन प्रदान करता है |

अटीया डूब्केन तथा लैंनो (2014) ने बहु कौशल कार्य बल पर कार्य बल में कौशल विकास को ध्यान में रखते हुए लचीली कामकाजी घंटों के साथ आवंटन पर अध्ययन किया। इस शोध में लचीले मानव संसाधनों के साथ बहुत अवधि के कारण कर्मचारियों के आवंटन की समस्या का मॉडल तैयार किया गया। काम के साथ बहुमुखी प्रतिभा सीखने और सीखने की घटनाओं के लचीलापन को ध्यान में रखा गया। विभिन्न विशेषताओं के साथ 400 परियोजनाओं पर निर्भर करते हुए इस दृष्टिकोण के प्रदर्शन की जांच की गई जिसके परिणामों ने विभिन्न पदों के संबंध में स्थिरता और दृष्टिकोण की मजबूती को दिखाया है |

अध्ययन की सार्थकता

वर्तमान समय नवीन तकनीकी तथा विद्युतीय यंत्रों के प्रयोग का समय है। बालक विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं जो उनके नवीन तकनीकी तथा विद्युतीय यंत्र के साथ-साथ विविध कौशल जैसे- सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल एवं नेतृत्व कौशल से भी संबंधित होता है | प्रस्तुत शोध के माध्यम से विविध कौशलों का विद्यर्थियों के जीवन में प्रयोग उसकी आवश्यकता तथा इसका शिक्षा एवं शैक्षणिक उपलब्धि के साथ संबंध को जानने का प्रयास किया गया है |

शोध उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध की जांच करना |
2. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध की जांच करना |
3. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध की जांच करना |

नल परिकल्पना

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |
2. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |
3. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने आंकड़ों के संग्रह के लिए सर्वे विधि का प्रयोग किया है |

समष्टि

वर्तमान अध्ययन में समष्टि के रूप में पटना जिला के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है |

प्रतिदर्श

वर्तमान अध्ययन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन पर आधारित है | बिहार राज्य के पटना जिला के माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9 वीं के विद्यार्थी को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है | कुल 501 प्रतिदर्श शामिल हैं |

शोध उपकरण

1. **बहु-कौशल अनुप्रयोग मापनी** : प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित एवं वैधिकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है | बहु-कौशल अनुप्रयोग मापनी शोध उपकरण के तीन आयाम हैं, जिसमें सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल तथा नेतृत्व कौशल शामिल हैं |
2. **शैक्षणिक उपलब्धि परीक्षण:** प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित एवं वैधिकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है | शैक्षणिक उपलब्धि परीक्षण के एकांश, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, सामान्य ज्ञान, गणित, अंग्रेजी तथा हिन्दी विषय से तैयार किये गए हैं |

सांख्यिकी प्रविधियां

आकड़ों के विश्लेषण के लिए एस.पी.एस.एस.के माध्यम के सहसंबंध सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है |

परिकल्पनाओं का विश्लेषण

नल परिकल्पना-1 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |

तालिका -1

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध

चर	संख्या	सारणीमान	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता
सृजनात्मक कौशल	501	0.114	0.132	सार्थक सहसंबंध
शैक्षणिक उपलब्धि	501			

(1% सार्थकता स्तर पर df=499 के लिए तालिका मूल्य 0.114)

विश्लेषण: उपर्युक्त तालिका-1 से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.132 है जो 1% सार्थकता स्तर के तालिका मूल्य 0.114 से अधिक है इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध है |

नल परिकल्पना-2 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |

तालिका -2

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध

चर	संख्या	सारणीमान	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता
सामाजिक कौशल	501	0.114	0.789	सार्थक सहसंबंध
शैक्षणिक उपलब्धि	501			

(1% सार्थकता स्तर पर df=499 के लिए तालिका मूल्य 0.114)

विश्लेषण: उपर्युक्त तालिका-2 से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.789 है जो 1% सार्थकता स्तर के तालिका मूल्य 0.114 से अधिक है इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध है |

नल परिकल्पना-3 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |

तालिका -3

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध

चर	संख्या	सारणीमान	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता
नेतृत्व कौशल	501	0.114	0.345	सार्थक सहसंबंध
शैक्षणिक उपलब्धि	501			

(1% सार्थकता स्तर पर df=499 स्वतंत्रता के लिए तालिका मूल्य 0.114)

विश्लेषण: उपर्युक्त तालिका-3 से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.345 है जो 1% सार्थकता स्तर के तालिका मूल्य 0.114 से अधिक है इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध है |

परिणाम

- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में सृजनात्मक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध है | उपर्युक्त परिणाम से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.132 है जो सकारात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल अच्छा होने से उनके शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि होती है | अत: उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बेहतर करने में सहायक होता है|
- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध है | उपर्युक्त परिणाम से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.798 है जो उच्च सकारात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल अच्छा होने से वे समाज के अन्य व्यक्तिओं के साथ सरलतापूर्वक संपर्क स्थापित कर पाते हैं और यह उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बेहतर करने में सहायक होता है|
- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध है | उपर्युक्त परिणाम से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.345 है जो सकारात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल अच्छा होने से उनके आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है जो उनके शैक्षणिक उपलब्धि को बेहतर करने में सहायक होता है|

निष्कर्ष

विद्यालय में बालक को शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ भी सिखाई जाती है, जिससे बालकों में विविध कौशलों का विकास किया जा सके | विभिन्न कौशलों के अंतर्गत बालक में सृजनात्मक कौशल, सामाजिक कौशल, नेतृत्व कौशल आदि का विकास किया जाता है, जिससे वे अपने जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर अपने विवेक तथा कला के माध्यम से बेहतर प्रदर्शन कर सके | विविध कौशल के विकास तथा उनका प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर साकारात्मक प्रभाव पड़ता है अतः शिक्षकों तथा पाठ्यक्रम निर्मातायों की ये जिम्मेदारी है कि पाठ्यचर्या विविध कौशल के विकास हेतु विषयवस्तु शामिल करे | साथ ही शिक्षक अपने कक्षा-कक्ष को इस तरह निर्मित करे कि विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ- साथ कला का व् विकास हो सके |

सन्दर्भ ग्रंथसूची

1. आटीयां, एल. अ.; एदुविन फी.और ल.जी.मा.ले.(2014). बहु -कौशल में कौशल विकास को ध्यान में रखते हुए लचीले कामकाजी घाट को घंटों के साथ कार्य पर आवंटन. *इंटरनेशनल जर्नल आफ प्रोडक्शन रिसर्च ट्रेलर ऑफ फ्रांसिस 52* (15) 4548-4573.
2. चौहान, सा. और शर्मा, अ. (2017). लिंग के आधार पर सार्वजनिक और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का रचनात्मकता एवं शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों का एक अध्ययन. *इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस इन साइंस एंड मैनेजमेंट* आई एस बी एन : 978-93- 86171-21-4.386-392.
3. मंगल, एस.के.(2008).शिक्षा में सांख्यिकी पी.एच.आई.,प्र.लि.जयपुर
4. वालिया, जे.(2010).शिक्षा तकनीक. अहम पाल पब्लिशर्स, पंजाब
5. श्रीनिवासनी, अ. अ. (2014). आउट सोर्स वातावरण पर बहु -कौशल का प्रभाव. *इंटरनेशनल जर्नल एडवांस रिसर्च 2*(1) 4544-4548.
6. सुरपुरमथि, ए.को. (2014). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का रचनात्मक तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस वॉल्यूम 3* (4)305-309.